IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

'आपहुदरी': अपने यकीनों पर जीने की आत्मकथा

डॉ. अपर्णा यू नायर, असिस्टेंट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

सेंट सेवियेर्स कॉलेज वैक्कम् ,कोट्टयम्, केरला

सार

'आपहुदरी': 'एक जिद्दी लड़की की आत्मकथा' रमणिका गुप्ता की एक अद्भुत बेबाक आत्मकथा की दूसरी कड़ी है।

इसमें उन्होंने अपनी इच्छा का महत्व दिया है या वह स्वच्छंद होना चाहती है। इसलिए उन्होंने इस प्रकार लिखा है कि "मैं स्वच्छंद होना श्रेयस्कर समझती हूं चूंकि इसमें छद्म नहीं है, दंभ भी नहीं है।"1

कुंजी शब्द

आत्मकथा, सामंती परिवार, पितृसत्तात्मक व्यवस्था

रमणिकाजी ने इस आत्मकथा में बचपन से आरंभ करते हुए धनबाद तक की यात्रा का विस्तृत लेखन किया गया है। जिसमें उनके जीवन्तता के कई पहलू सम्मिलित हैं। राजनीति, सामाजिक और साहित्यिक क्षेत्र में किए गए संघर्षो का आंकन इसमें मिलता है।

रमणिकाजी सामंती परिवार की औरत है। सामंती परिवारों में स्त्रियों के लिए बडे व्यवस्था होते हैं। इस समाज में पुरुषों को जो स्वतंत्रता और अधिकार प्राप्त हुए हैं तो वहां औरत पर कई तरह के जंजीर होते हैं। औरतों ने इन नियमों का पालन करना भी अपना कर्तव्य मानती है। उनके जिंदगी का पूरा फैसला पुरुषों ने लिए थे। लेकिन रमणिकाजी इन परंपरावादी मान्यताओं को तोड़कर अपने मर्जी के अनुसार कार्य करती हैं। जब उनकी मां ने सिर ढककर चलने के लिए कहती तो तब वे उनके विरुद्ध आवास उठकर इस प्रकार कहती है कि "नहीं ढकूंगी सिर ! क्यों ढकूं ? क्या लड़का सिर ढक कर चलते हैं? रवि को क्यों नहीं कहती सिर ढकने को? मैं कोई उस से काम हूं क्या?2 उन्होंने आगे कहती है कि "मैं नहीं बनूंगी अच्छे घर की

लड़की। यह सब पुरानी बातें हैं। मैं नहीं मानूंगी कोई पुरानी बात। मैं अपना ही रिवायत चलाऊंगी। खुद अपने आप।"3

सामंती व्यवस्था में नारी को उपभोग की वस्तु के रूप में देखी जाती है। कई औरतों के साथ संबंध रखना उसकी पौरुष का सबूत माना जाता है। सामंती पत्नियां भी यह मानती हैं। उन्होंने अपने पति को दूसरा विवाह करके ले जाने की रिवाज मामूली थी। रमणिकाजी के नाना घर में ही निजी पुत्री से ही दैहिक संबंध बना रखा था। लेखिका ने इसे चिन्हित करते हुए लिखा है कि "घर में औरतों को आदर .....पुरुष सभी का बिना अपराध बोध के उपभोग करता था। स्त्री अपराध बोधों की पटारी थी।"4

भारतीय समाज में 'शुचिता' शब्द के लिए बहुत महत्व है। वह एक लड़की को जन्म से लेकर मृत्यु तक के समय जंजीर की तरफ बाधा उड़ाती है। इसलिए किसी लड़की अपने आप से बलात्कार खाए तो वह चुप रहती है क्योंकि वह अपने परिवार की इज्जत टूटना नहीं चाहती। रमणिकाजी ने इसलिए लिखा है कि " शुचिता भंग होने का दंश, अपराध बनकर जीवन भर कसक कसकता है और इसी के कारण औरत जन्म –जन्मांतर तक अपराधनी, बेवफा, विश्वासाघातिनी और छिनाल कहलाती है। अगर औरत इसकी निरर्थकता पहले ही समझ जाए तो शायद हीन ग्रंथि से ग्रसित होने से बच सकती है। शुचिता का टूटना अपने ही नजर में गिरता है, जबकि पुरुष शेखी बघारता है।"5

इस आत्मकथा में हमें यह भी मिलता है कि किस तरह समाज एक स्त्री को अपने पैरों में खड़े होने के लिए मना करती थी। समाज अपने अनुकूल झुकाने का प्रयास करता रहता है। उसके शारीरिक ,मानसिक विकास,रूप ,रंग, चलन, हंसी आदि में समाज को अपने ही नजर है। ये लड़कियों को साहसी नहीं बनाती। इसके संबंध में लेखिका ने इस प्रकार लिखा है कि " बचपन से ही मैं आंखों की भाषा 'नज़र' के माध्यम से पढने में माहिर हो गई थी। देखते ही 'नज़र' को पहचान लेती थी। इसलिए नजरों मुझे प्रभावित करती थी। जीवन भर आंखें मेरा पीछा करती रही।"6

पितृसत्तात्मक व्यवस्था में स्त्री विरुद्ध प्रथाओं का प्रचार बहुत अधिक होता है। इसमें एक है 'कुड़ीमार' प्रथा। लोगों का विश्वास इस प्रकार है कि 'बेदी कुल' की लड़कियां गुरु परिवार की बेटियां होती थी इसलिए उसे अपने बहू बनाकर घर का काम करवाने पर अपने आप को पाप मिलेगा। इसलिए गुरु परिवार बेटियों को मार डालता था। इस बात को दृष्टांत करके लेखिका ने इस प्रकार लिखा है कि " दाई घुट्टी में ही लड़कियों को अफीम चटा देती थी।"

रमणिकाजी ने जिस समाज में रहती थी उसे पुरुष प्रधान व्यवस्था में स्त्री की प्रेम कामनाओं को कोई मूल्य नहीं है। लेकिन लेखिका प्यार करती थी और उसके लिए साहस और समर्पण भी किया है। अपना पहला प्यार हमीद और उसके परिवारों को अपने रक्षा के बारे में ना सोचकर दंगों के बीच सुरक्षित शरणार्थी शिविरों तक पहुंचवाती है। वर्षों बाद उन्होंने वेद प्रकाश को अपने जीवनसाथी मानी। उनके प्रेम संबंध के बारे में प्रिंसिपल पूछने के वक्त बिना डर से दृढ़ता पूर्वक कहा– " वह मेरा फयांसी है, मैं उनसे प्रेम करती हूं, विवाह भी उसी से करूंगी।"7

रमणिका गुप्ता स्त्री स्वतंत्रता की वक्त है। वह सिर्फ कहने में नहीं करने में होती है। उन्होंने अपनी जिंदगी को अपनी तरफ से जीकर स्त्री स्वतंत्रता का मतलब दुनिया को दिखाती है। इस आत्मकथा में उन्होंने किसी भी जगह पर अपने महिमामंडन का प्रदर्शन नहीं किया है। सब बातों को खुले से लिखती है। उन्होंने छुपाने की प्रवृत्ति को इस प्रकार माना है कि " गोपनीयता ही स्त्री की परतंत्रता का सबसे बड़ा औजार है।"8 उन्होंने रिश्तों में भी कोई बात को छुपाना नहीं चाहती है "उनकी राय में न रिश्तो में छिपावा होंगे न कोई ब्लैकमेल करेगा।"9

अत: इस आत्मकथा अपने इच्छा अनुसार जीने की स्त्री का साहस और अपने फैसले का परिणाम भोगने को भी तैयार होने की कथा है। इसलिए उन्होंने इस प्रकार लिखा है कि "बहुत हमले हुए, बहुत आरोप लगे, लांछन उछाल गए। मैंने उन्हें स्वीकार नहीं किया और वापस उसी समाज को लौट दिया। बूमरैंक कर गए उसके सब होने पर। मैं अगली मुहिम के लिए फिर से उडठ खड़ी होती रही।"10 इसलिए हम कह सकते हैं कि यह एक सशक्त आत्मकथ्य है। अपने जीवन का संघर्ष एक नारी को हमेशा सशक्त बना रहूंगी। यह हमें रमणिकाजी के जिंदगी को देखने के वक्त में मिल सकता है।

संदर्भ संकेत

1. रमणिका गुप्ता, आपहुदरी : एक जिद्दी लड़की की आत्मकथा, सामयिक प्रकाशन,नई दिल्ली, 2016, पृ. 448
2. वहीं, पृ. 33
3. वहीं, पृ. 33
4. वहीं, पृ. 70
5. वहीं, पृ. 19
6. वहीं, पृ. 37
7. वहीं, पृ. 196
8. वहीं, पृ. 20
9. वहीं, पृ. 20
10. वहीं, पृ. 18

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. रमणिका गुप्ता, आपहुदरी : एक जिद्दी लड़की की आत्मकथा, सामयिक प्रकाशन,नई दिल्ली, 2016
2. International Journal of Research in Social Sciences, Vol.9, Issue 3, March 2019
3. https://streekaal.com/apudari
4. https://hi.m.wikibooks.org/wiki
5. https://hindi.feminisminindia.com/2019